शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ५१ : नई दिल्ली : २५-३१ मार्च २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए सिरियारी पधार गए हैं। पूज्यप्रवर ४ अप्रेल को पाली पधार रहे हैं। यहां ६ अप्रेल को महावीर जयंती का आयोजन होगा। २२ अप्रेल को बालोतरा पधार जाएंगे। यहां २४ अप्रेल को अक्षयतृतीया तथा ३० अप्रेल को आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव का विराट आयोजन होगा, जिसमें देश के कोने-कोने से समागत श्रद्धालु भाग लेंगे।

ije J)); vkpk;ioj tlky dh vkj

tk.kUnk e fo'kky tuifrfufèk lEeyu

f† ekpA परम पावन आचार्यप्रवर आज प्रातः नौ किमी. का विहार कर द्विदिवसीय प्रवास हेतु जाणुन्दा पधारे। अपने आराध्य के चरणस्पर्श से अपने गांव को पावन बना देखकर यहां का तेरापंथ समाज अतिशय आह्लादित था। गांव के अन्य जैन-जैनेतर समाज में भी उत्साह और उल्लास का वातावरण था। पूज्यप्रवर ने गांव के भीतर पधारने से पूर्व सेठ सिरेमल देवराज नाहर राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय में अल्पकालिक प्रवास किया।

विद्यालय परिसर में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम विशाल जनप्रतिनिधि सम्मेलन के रूप में आयोजित था। कार्यक्रम के प्रारंभ में नाहर परिवार की बहनों ने मंगलगीत प्रस्तुत किया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री मूलचन्द नाहर स्वागताध्यक्ष श्री घीसूलाल नाहर आदि ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में अपने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। स्थानीय सरपंच श्री कालूरामजी सीरवी, पाली जिलाप्रमुख श्री खुशवीरसिंहजी और विधायक श्री केसाराम चौधरी, श्री चक्रवर्तीसिंह एवं डा.सुरपतसिंहजी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री भरतसिंहजी ने अहिंसा यात्रा को राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु अत्यन्त उपयोगी बताते हुए आचार्यवर के उपदेश को आत्मसात्‌ करने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित ओम विश्वदीप गुरुकुल आश्रम जाडन के महामंडलेश्वर स्वामी जसराजपुरी, गोसाईंमठ बेंगलुरु के श्री सुरेश भारतीजी, बी.जी.एस.मठ बेंगलुरु के श्री सौम्यनाथजी के विशेष वक्तव्य हुए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरक अभिभाषण हुए। समणी श्रद्धाप्रज्ञाजी ने अपनी मातृभूमि में अपने आराध्य की अभिवंदना में भावसुमन अर्पित किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म साहित्य में चौरासी लाख जीव योनियां बताई गई हैं। विभिन्न प्राणी हैं। उनमें बहुत से प्राणी हमारे द्वारा ज्ञात हैं तो कई प्राणी हमारे लिए अज्ञात भी हैं। जो दृश्य प्राणी हैं, उनमें सबसे अच्छा प्राणी मैं आदमी को मानता हूं। ऐसा मानने के पीछे दो आधार हैं। पहला आधार तो यह है कि भारतीय धर्मग्रंथों के अनुसार आदमी ही एक ऐसा प्राणी है, जो भगवत्ता को प्राप्त हो सकता है। अन्य कोई प्राणी पूर्णतया भगवत्ता को प्राप्त नहीं हो सकता। दूसरा आधार है कि आदमी के पास जैसी बौद्धिक शक्ति होती है, वैसी दूसरे प्राणियों के पास मिलना कठिन है। यदि कोई मुझसे यह पूछे कि दुनिया का अधमतम प्राणी कौन है? तो भी मेरा उत्तर आदमी ही होगा, क्योंकि जैसी अधमता आदमी कर सकता है, वैसी अधमता किसी पशु के वश की बात नहीं हो सकती। एक आदमी

जितनी बड़ी हिंसा, धोखाधड़ी आदि कर सकता है, उतनी हिंसा और धोखाधड़ी अन्य प्राणी नहीं कर सकता। अपेक्षा इस बात की है कि आदमी अपनी श्रेष्ठता को उजागर करते हुए अधमता को तिरोहित करने का प्रयास करे।'

जनप्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित करते हुए परमाराध्य आचार्यवर ने कहा--'जनप्रतिनिधि सेवा के लिए चुने जाते हैं और मेरा तो मानना है कि जनप्रतिनिधि जनता की सेवा करते भी हैं। जनता उसे इसी उम्मीद से चुनती है कि यह हमारी भलाई करेगा। भारत लोकतान्त्रिक प्रणाली वाला देश है। मैं तो लोकतान्त्रिक प्रणाली को शासन की सुन्दर प्रणाली मानता हूं। इस प्रणाली में जनता के द्वारा जनता के लिए जनता पर शासन किया जाता है। यदा-कदा चुनावी माहौल के विषय में सुनने को मिलता है। यदि शराब, पैसे आदि प्रलोभनों के माध्यम से वोट दिए अथवा लिए जाते हैं तो वहां अशुचिता आ जाती है। सरकार चलाने वालों में नैतिक मूल्य परिपुष्ट बने रहने चाहिए। लोकतंत्र में अनुशासन और कर्तव्य के प्रति निष्ठा का भाव रहता है तो राष्ट्र की व्यवस्था स्वस्थ बनी रह सकती है। जो जिस क्षेत्र में कार्य करे, उस क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को बनाए रखे तो जनता की ज्यादा अच्छी सेवा हो सकती है। जनप्रतिनिधि जनता में से ही आते हैं। अतः जनता अच्छी होगी तो वे स्वतः अच्छे हो सकेंगे। जनप्रतिनिधित्व करने वाले लोग आदर्श स्थापित करें और उसे बनाए रखें तो दूसरों को भी प्रेरणा मिल सकती है।'

आचार्यवर के प्रवचन के उपरान्त श्री जैन संघ जाणुन्दा की ओर से मंत्री श्री मदनलाल नाहर ने सिरियारी समाधि स्थल के परिपार्श्व में एक अस्पताल के निर्माण की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन श्री अविनाश नाहर ने किया।

जनप्रतिनिधि सम्मेलन में राजस्थान के तैंतीस जिलों में से पचीस जिलों के जिलाप्रमुख, पाली जिले की दस पंचायत समितियों के दसों प्रधान, दसों विकास अधिकारी, तैंतीस में से तीस जिला परिषद सदस्य, पचीस में से बाईस पंचायत समिति सदस्य तथा तीन सौ बीस सरपंचों में से दो सौ बयासी सरपंच उपस्थित थे। एक छोटे से गांव में इस तरह के विशाल जनप्रतिनिधि सम्मेलन का समायोजन ऐतिहासिक दृष्टि से भी उल्लेखनीय और स्मरणीय है। राजस्थान जिलाप्रमुख संघ के अध्यक्ष श्री खुशवीरसिंहजी ने बताया कि यह पहला अवसर है कि राजधानी जयपुर के अतिरिक्त किसी क्षेत्र में इतने जिलाप्रमुख एकत्रित हुए हैं। उपस्थित जिलाप्रमुख और उनके जिले इस प्रकार हैं--श्रीमती मदनकंवर (बाडमेर), श्री रामचरण मीणा (बारां), श्रीमती सुशीला सालवी (भीलवाड़ा), श्री रामेश्वरलाल (बीकानेर), श्री राकेश बोयल (बूंदी), श्रीमती सुशीलादेवी जीनगर(चित्तौड़गढ़), श्रीमती कौशल्या पूनिया (चूरू), श्री अजितसिंह (दौसा), श्री भगवतीलाल रोत (डूंगरपुर), श्रीमती शोभादेवी (हनुमानगढ़), श्री हजारीलाल नागर (जयपुर), श्री अब्दुल्ला फकीर (जैसलमेर), श्रीमती मनोरमादेवी (झालावाड़), श्री हनुमानप्रसाद (झुंझुनू), श्रीमती दुर्गादेवी बलाई (जोधपुर), श्री विद्याशंकर नंदवाना (कोटा), श्रीमती बिन्दु चौधरी (नागोर), श्री खुशवीरसिंह (पाली), श्री किशनलाल गमेती (राजसमन्द), श्रीमती सुनीता गुर्जर (सवाईमाधोपुर), श्रीमती रीटासिंह (सीकर), श्री चंदनसिंह देवड़ा (सिरोही), श्रीमती कल्लीदेवी मीणा (टोंक), श्रीमती मधु मेहता (उदयपुर), श्री बद्रीलाल (प्रतापगढ़)

'आचार्य महाश्रमण सेतु' का लोकार्पण

कार्यक्रम के उपरान्त राजस्थान के सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री भरतसिंह द्वारा 'आचार्य महाश्रमण सेतु' का लोकार्पण किया गया। ज्ञातव्य है कि मोखमपुरा से जाणुन्दा के बीच स्थित नदी पर एक करोड़ छत्तीस लाख रुपये की लागत से निर्मित इस सेतु का निर्माण राज्य सरकार द्वारा करवाया गया है। इस कार्य और जनप्रतिनिधि सम्मेलन की विशाल समायोजना में जाणुन्दा निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री मूलचन्द नाहर का निष्ठापूर्ण श्रम उल्लेखनीय है। कार्यक्रम में श्री ललित आच्छा ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा लोकार्पण समारोह हेतु प्रेषित सन्देश का वाचन किया। परमपूज्य आचार्यवर ने लोकार्पण

से पूर्व सेतु के परिपार्श्व में जनता को मंगलपाठ सुनाया। जाणुन्दा पदार्पण से पूर्व पूज्यवर ने 'आचार्य महाश्रमण स्टेडियम' के निर्माण हेतु निर्मित भूमि पर भी मंगलपाठ का उच्चारण किया।

पूज्य आचार्यवर कार्यक्रम के पश्चात् जाणुन्दा गांव में पधारे। आज का प्रवास श्री दीपचन्द अनराज नाहर परिवार के निवास पर हुआ। पूज्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर संपूर्ण परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

rIr cuk tk.kUnk dk tu&tu

f‡ ekpA जाणुन्दा प्रवास का दूसरा दिन। परमपूज्य आचार्यवर ने प्रातः सभी जैन घरों में चरणस्पर्श किए। इस क्रम में आचार्यवर ने प्रायः सभी घरों में विराजमान होकर परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। आचार्यवर की इस करुणावृष्टि से जाणुन्दा का जन-जन तृप्ति का अनुभव कर रहा था। उनकी प्रसन्न मुखाकृति उनके हृदय में उमड़ रही श्रद्धा-भक्ति को अभिव्यक्त कर रही थी। गृह-स्पर्शना के दौरान पूज्यप्रवर तेरापंथ भवन में भी पधारे और वहां कुछ क्षण विराज कर 'प्रभो! यह तेरापंथ महान' गीत का आंशिक संगान किया। पूज्यवर का आज का प्रवास श्री अविनाश घीसूलाल नाहर परिवार के निवास पर रहा। यह प्रवास इस परिवार के लिए मानो सभी त्यौहारों का संगम बन गया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्रीमती यमुना सेठिया, श्री रवि नाहटा, श्री मर्यादा कोठारी आदि ने अपनी भावनाओं को प्रस्तुति दी। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में सत्यभाषण की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो व्यक्ति अमनोज्ञ स्थिति का योग मिलने पर और मनोज्ञ स्थिति का वियोग होने पर आर्त्तध्यान नहीं करता, वह मानसिक स्थिति को प्राप्त हो सकता है। यह व्यक्ति की अपनी दुर्बलता होती है कि वह अनुकूल स्थिति प्राप्त होने पर खुश और प्रतिकूल स्थिति में दुःखी बन जाता है। प्रशंसा से फूल जाता है और निन्दा से उदास बन जाता है। दोनों स्थितियों में मानसिक संतुलन बनाए रखना साधना होती है। यदि जीवन में कोई विशेषता नहीं होती तो दूसरों के कहने मात्र से व्यक्ति बड़ा नहीं होता। इसी प्रकार किसी के द्वारा आलोचना किए जाने मात्र से व्यक्ति अधम नहीं बन जाता, अपितु वह अपने गुणों और दुर्बलताओं के आधार पर अच्छा अथवा बुरा बनता है। झूठी आलोचना से घबरा कर किसी अच्छे कार्य को रोकने से विकास अवरुद्ध हो जाता है। इसलिए आलोचना से अविचल रहते हुए व्यक्ति साहस के साथ सत्पथ पर गतिमान रहने का प्रयत्न करे।'

आचार्यवर ने अपने प्रवचन में जाणुन्दा की समणी श्रद्धाप्रज्ञाजी का उल्लेख करते हुए उन्हें अच्छी साधना और पवित्र कार्य करते रहने का आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यवर ने जाणुन्दा के श्री घीसूलालजी नाहर, श्री मूलचन्दजी नाहर, श्री दीपचन्द नाहर, श्री अविनाश नाहर आदि कार्यकर्ताओं की सेवा का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित अनुसूचित जाति जनजाति के अध्यक्ष श्री गोपारामजी ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। श्री मूलचन्द विकासकुमार नाहर परिवार की ओर से तेरापंथ महासभा द्वारा पूज्यवर की यात्रा में की जा रही माइक व्यवस्था में सहयोग हेतु ग्यारह लाख रुपये के आर्थिक अनुदान की घोषणा की गई।

जाणुन्दा में तेरापंथ समाज के चौदह घर हैं। आचार्यवर के इस प्रवास में जहां इन परिवारों के सदस्यों ने अपने पैतृक गांव में पहुंच कर इस अवसर का लाभ उठाया, वहीं अन्य जैन समाज के भी अनेक लोगों ने अपने घर खोल कर इस धर्म-गंगा में अभिस्नात होकर स्वयं को पावन बनाया। द्विदिवसीय प्रवास में सभी परिवारों को आचार्यवर ने उपासना का अवसर प्रदान किया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

vkÅok vk, vkjkè;

f^ ekpA परम पावन आचार्यवर प्रातः जाणुन्दा से प्रस्थान करने से पूर्व यहां के नवनिर्मित श्री श्वेताम्बर जैन कार्यालय भवन में पधारे। पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर इस भवन का उद्घाटन हुआ। पूज्यवर जाणुन्दा से आऊवा की ओर विहार करते हुए मार्गवर्ती देवली गांव के भीतर पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से यहां की जनता में उल्लास का वातावरण था। प्रायः चार जैन घर खुले रहने वाले इस गांव में पूज्यवर के पदार्पण के अवसर पर अठारह घर खुल गए। पूज्यवर ने स्वागत जुलूस के उपरान्त स्थानीय तीन तेरापंथी परिवारों सहित सभी जैन समाज के घरों का स्पर्श किया।

यहां आयोजित कार्यक्रम में पूज्यवर ने ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की अवगति देते हुए नशा, गुस्सा और मृषा से उपरत रहने की प्रेरणा प्रदान की। श्री अमृतलाल डांगी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावसुमन अर्पित किए।

पूज्य आचार्यवर आज कुल ११.०५ किमी. का विहार कर आऊवा पधारे। अपने आराध्य के आगमन से आउवावासी खुशियों से फूले नहीं समा रहे थे। सर्वत्र अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। आऊवा में आचार्यवर का प्रवास जैन भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, श्री देवराज रायसोनी आदि ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। पूर्व प्रधान श्री चक्रवर्तीसिंहजी व विधायक श्री केसाराम चौधरी ने भी अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरणादायी अभिभाषण हुए।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सामान्यतया व्यक्ति स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखना चाहता है। मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु विकारों का रेचन करना होगा। अनेक बार मन में रागात्मक, मोहात्मक एवं द्वेषात्मक ग्रंथियां बन जाती हैं और वे चित्त को मलिन व विक्षिप्त बना देती हैं। विकारों को छोड़ने वाला व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है। साधु को तो सदा शान्त रहना चाहिए। मैंने तो साधु की एक छोटी-सी परिभाषा बना रखी है कि जो शान्त होता है, वही संत होता है। जिसके विकार उग्र हों, वह साधु नहीं हो सकता अथवा यह समझा जाना चाहिए कि उसकी साधना में अभी कमी है। साधु के हर कार्य में संयम रहे। उसके मुख पर पवित्र प्रेम और शान्ति झलके। कोई गाली दे अथवा प्रशंसा करे, साधु समता में रहे तो उसके कल्याण का पथ प्रशस्त हो सकता है।'

आऊवा में सत्रह चौकों में विभक्त आठ तेरापंथी परिवार हैं। रायसोनी गोत्र के ये सभी परिवार पूज्यवर के पदार्पण से अतिशय आह्लादित थे। दस मूर्तिपूजक जैन परिवारों के घर भी इस अवसर पर खुल गए। इस प्रकार संपूर्ण जैन समाज में प्रसन्नता का वातावरण था। सायंकालीन आहार के पश्चात् पूज्यवर ने श्रद्धालुओं के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। अवशिष्ट घरों में दूसरे दिन विहार से पूर्व पदार्पण हुआ। रात्रि में सभी परिवारों ने पूज्यवर की उपासना का लाभ उठाया और विविध संकल्प स्वीकार किए।

dkjkMh d fy, Ng fdeh- dk vfrfjDr fogkj

f‰ ekpA परम पावन आचार्यवर आज के निर्धारित प्रवास क्षेत्र बिठोड़ा पधारने से पूर्व छह किमी. का अतिरिक्त विहार कर काराड़ी पधारे। मार्ग में साटियों की ढाणी में राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को पूज्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। आचार्यवर के पदार्पण से काराड़ीवासी अत्यन्त पुलकित और प्रमुदित थे। चारों ओर हर्ष का दरिया-सा लहरा रहा था। सैकड़ों लोगों ने गांव की सीमा पर पूज्यवर की भावभीनी अगवानी की। पूज्यवर के स्वल्पकालिक प्रवास हेतु यहां के सभी इक्कीस तेरापंथी परिवारों

और नौ मूर्तिपूजक जैन परिवारों ने अपने घर खोले। पूज्यवर ने सभी घरों को अपनी पदरज से पावन किया। जैन भवन में पूज्यवर का स्वल्पकालिक प्रवास हुआ।

यहां आयोजित कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के माध्यम से पूज्यवर का अभिनंदन किया। सरपंच श्रीमती आशा पुरोहित, राजस्थान के पूर्व पर्यावरण मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण दवे और विधायक श्री केसारामजी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। श्री ताराचन्द बरलोटा एवं श्री मीठालाल बरलोटा ने श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। काराड़ी के ग्रामीणों द्वारा भरे गए नशामुक्ति के फॉर्म पूज्यवर के करकमलों में समर्पित किए गए। ग्रामीणों ने खड़े होकर पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

परमपूज्य आचार्यवर ने उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए अहिंसा और नैतिकता को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान की और काराड़ी आने पर सात्विक संतोष व्यक्त किया। आचार्यवर ने राजनीति से जुड़े लोगों को राजनीति में मूल्यवत्ता को बनाए रखने का संबोध प्रदान किया।

तेरापंथ की मर्यादा भूमि बिठोड़ा में मर्यादापुरुषोत्तम

परम श्रद्धेय आचार्यवर आज कुल १३ किमी. का विहार कर बिठोड़ाकलां पधारे। उल्लेखनीय है--यह वही गांव है, जहां सं.१८३२ के मार्गशीर्ष कृष्णा सप्तमी के दिन आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ के संविधान का निर्माण किया तथा अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनि भारमलजी की नियुक्ति की। तेरापंथ की मर्यादा भूमि में मर्यादापुरुषोत्तम आचार्यप्रवर के पदार्पण से श्रद्धालुओं के हृदय में श्रद्धा का ज्वार-सा उमड़ रहा था। हर चेहरे पर प्रसन्नता थिरक रही थी। आचार्यप्रवर का प्रवास श्रीसंभवनाथ भवन में हुआ।

रावला परिसर में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्री बाबूलाल खांटेड़ ने अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में लोगों को हिंसा, असत्य, चोरी आदि से उपरत होने की प्रेरणा प्रदान की। बिठोड़ा समागमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम तेरापंथ के ऐतिहासिक क्षेत्र बिठोड़ा में आए हैं। यह मर्यादा का क्षेत्र है, जहां तेरापंथ की मर्यादाओं का निर्माण हुआ। महामना आचार्य भिक्षु ने यहां मर्यादाओं के निर्माण के साथ-साथ अपने उत्तराधिकारी के रूप में भारमलजी स्वामी को मनोनीत किया। भिक्षु स्वामी को भारमलजी स्वामी जैसे विनीत शिष्य प्राप्त हुए, जिन्होंने आचार्य भिक्षु के साहित्य का लेखन कार्य किया। हम लोग आचार्य भिक्षु वाङ्मय के संपादन का प्रयत्न कर रहे हैं। उस कार्य में भारमलजी स्वामी द्वारा लिखित प्रति हमारे लिए आधार और प्रमाण है। महामना आचार्य भिक्षु का साहित्य तेरापंथ का शास्त्र है। राजस्थानी भाषा का वह साहित्य हमारे लिए आर्षवाणी है। मैं तो सोचता हूं, उस महामनीषी में तीक्ष्ण मेधा, प्रतिभा और प्रज्ञा थी। निर्भीकता उनके जीवन में तो बोलती ही थी, उनके साहित्य में भी निर्भीकता के दर्शन होते हैं। उन्होंने बहुत साफ-साफ लिखा और कहा। कितने गूढ़ सिद्धान्तों की बातें उन्होंने लिखीं। ऐसे साहित्य के अवगाहन का अवसर भी सबको प्राप्त नहीं होता। स्वामीजी ने एक विशिष्ट साहित्य का निर्माण किया। उस कार्य में परमपूज्य भारमलजी स्वामी उनके सहयोगी रहे।

भारमलजी स्वामी को अपना उत्तराधिकार सौंप कर और संघ के लिए मर्यादाओं का निर्माण कर आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की परंपरा को आगे बढ़ाने का मानो शिलान्यास कर दिया। तेरापंथ संगठन की मर्यादाएं बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। वे शासन का आधार हैं, प्राणतत्त्व हैं, त्राण हैं। मर्यादाओं का निर्माण और भारमलजी स्वामी जैसे शासन सरताज का मनोनयन बिठोड़ा में होना बिठोड़ा के लिए महत्त्वपूर्ण बात है और हमारे लिए बिठोड़ा महत्त्वपूर्ण है। अच्छा हुआ कि मैं बिठोड़ा आ गया। यदि कांठा आकर बिठोड़ा

को छोड़ देता तो संभवतः मेरे जीवन की और इस कांठा यात्रा की एक छोटी-सी भूल हो जाती। अच्छा हुआ कि मैंने वह भूल नहीं की और बिठोड़ा आ गया। हम मर्यादा भूमि में आए हैं। हमारे मन में मर्यादाओं के प्रति निष्ठा का भाव रहे, यह काम्य है।'

पूज्य आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'स्वामीजी ने संघ को जमाया था। हमें तो जमा-जमाया प्राप्त है। उन्होंने कितने कष्ट भोगे होंगे? उन्हें तो आहार-पानी भी पूरा नहीं मिलता था। स्थान की प्राप्ति में भी कठिनाई खड़ी हो जाती थी। हमें तो लोग कितनी भावना से बहराते हैं। स्थूल भाषा में कहूं तो उन्होंने जो तपस्या की, कष्ट भोगे, संघरूपी पौधा रोपा, उसे सिंचन दिया, आज उस वृक्ष के मीठे फल हम खा रहे हैं। मैं बिठोड़ा आकर उस महापुरुष का विशेष रूप से अत्यन्त श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं। इस मनोनयन भूमि पर महामना भारमलजी स्वामी का भी श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं।'

प्रवचन के पश्चात् पूज्यप्रवर रावला में पधारे और वहां कुछ क्षण विराज कर राजपूत परिवार की महिलाओं को पावन पाथेय प्रदान किया। बिठोड़ा में आचार्यवर के पदार्पण से बीस तेरापंथी परिवारों सहित चालीस जैन घर खुल गए। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उन सभी घरों में पधारे। इस दौरान पूज्यप्रवर प्रेमराजजी नाहर के निवास पर पधारे। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का आज का प्रवास यहीं था। लोगों ने बताया कि यह वही स्थान है, जहां आचार्य भिक्षु ने संविधान की रचना की और भारमलजी स्वामी का उत्तराधिकारी के रूप में मनोनयन किया था। उस समय किशनोजी पिरोदिया के स्वामित्व में रहे इस मकान को कालान्तर में नाहर परिवार ने खरीद लिया। पूज्यप्रवर ने यहां कुछ समय तक विराजमान होकर इतिहास के विषय में अवगति प्राप्त की। रात्रि में श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त कर विविध संकल्प स्वीकार किए।

l;uxj e il dWÝl

fŠ ekpA तेरापंथ के ऐतिहासिक क्षेत्र बिठोड़ाकलां से परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सर्वप्रथम सूर्यनगर स्थित क्षेत्रीय विधायक श्री केसाराम चौधरी के आवास पर पधारे। मार्ग में बन रही सड़क के कारण नुकीले पत्थर बिछे हुए थे, रेलवे फाटक भी बंद था, इसलिए पन्द्रह मिनट अतिरिक्त लग गए। विधायक चौधरी के निवास पर प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन हुआ। विभिन्न अखबारों से जुड़े संवाददाताओं द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों के उत्तर में पूज्य आचार्यवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों पर विशद प्रकाश डालते हुए कहा--'आम जनता में धर्म के प्रति नवचेतना जागरण के साथ नशामुक्ति, ईमानदारी के रास्ते पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित करना ही इस यात्रा का उद्देश्य है। हर जाति, वर्ग, क्षेत्र व सम्प्रदाय के लोगों में नशामुक्ति की चेतना जागृत कर उनसे संकल्प पत्र भरवाए जा रहे हैं। नशे की प्रवृत्ति समाज के लिए घातक है। यह प्रवृत्ति अपराधों की उत्पत्ति का भी मुख्य कारण है। नशामुक्त समाज से देश का विकास संभव है।' आचार्यवर ने अपने घोषित चतुर्मासों एवं यात्रा की भी पत्रकारों को जानकारी दी।

विधायक केसाराम चौधरी ने भावविभोर होकर कहा--'मेरा तो कायाकल्प हो गया, मैं धन्य हो गया। मैं कृतकृत्य हूं और मुझे इतनी प्रसन्नता है कि उसे व्यक्त करने में मैं असमर्थ हूं। आपकी कृपा मेरे पर बनी रहे और आपसे सतत प्रेरणा मुझे मिलती रहे, यही मेरी कामना है।'

विधायक के आवास पर भाजपा जिलाध्यक्ष श्री महेन्द्र बोहरा, जिला महामंत्री श्री सुमेरसिंह कुंपावत सहित मंडल व ब्लॉकस्तरीय कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

आचार्यप्रवर सूर्यनगर से कच्चे रास्ते पर प्रस्थित हुए। धूप तेज होती जा रही थी। बीच में मिठाणिया गांव में विधायक के फार्महाउस व उनके भाइयों के घरों पर पूज्यवर ने चरण स्पर्श किया। वहां से पूज्यप्रवर चवाड़िया पहुंचे। कतारबद्ध खड़े सैकड़ों लोगों ने पूज्यवर की अगवानी कर भावभीना स्वागत किया। सत्ताईस वर्षों के बाद आचार्यों के पदार्पण पर गांव में अपूर्व उल्लास था। वहां आयोजित कार्यक्रम में ग्रामीण लोगों

की विशाल उपस्थिति में महिला मंडल की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। श्री नारायण कुंपावत एवं श्री माणक संचेती ने अपने विचार रखे। आचार्यवर के प्रेरक उद्‌बोधन से प्रभावित होकर अनेक ग्रामीणों ने नशे का त्याग किया। गांव में कार्यक्रम से पूर्व शीघ्रता से घरों में स्पर्श किए जाने के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'मुझे भी पूरा संतोष नहीं हो रहा है, अतः पूरे गांव के घरों को पुनः स्पर्श करने का भाव है।' कार्यक्रम के पहले व बाद में पूज्य चरणों के स्पर्श से चवाड़िया गांव के घर दो बार लाभान्वित हुए। इसी गांव के श्री किशनसिंह राजपूत के घर पर आचार्यवर कुछ क्षण विराजे। घर की बहनों ने 'म्हाने गुरूसा आणे रो घणो कोड़' गीत गाया। ठाकुर साहब ने यावज्जीवन शराब न पीने का संकल्प स्वीकार किया। श्री ताराचन्द अनराज संकलेचा के घर पर पूज्यवर का संक्षिप्त प्रवास हुआ। चवाड़िया में नौ परिवारों के पन्द्रह चौकों में विभक्त सभी घर खुले। प्रायः सभी परिवार दक्षिण भारत में प्रवासी हैं। इस अवसर पर छह स्थानकवासी घर भी खुले।

चवाड़िया से पुनः कच्चे रास्ते पर चरैवेति-चरैवेति घोष को सार्थक करते हुए पूज्यचरण आगे बढ़े। सुबह की लम्बी छाया तो अब एक-दो फीट जितनी हो रही थी। तेज धूप, पसीने से तरबतर वदन, किन्तु बिना किसी मानसिक संक्लेश के पूज्यप्रवर खारची होते हुए लगभग १२.०५ बजे मारवाड़जंक्शन पहुंचे। वहां श्री बाबूलाल सियाल के आवास पर आपका प्रवास हुआ। मात्र दो-चार मिनट के अनन्तर थोड़ी दूर स्थित प्रवचन पण्डाल में पधारे। तपता सूरज, पतले सफेद कपड़े का पाण्डाल में तीव्र गर्मी के अहसास के बीच कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

d"kk; gekj vèkhu gk

कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत गीत से हुआ। उपासक श्री तेजराज संचेती, मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द ओस्तवाल, विधायक श्री केसाराम चौधरी, श्री कान्तिलाल सेठिया (दुधोड़), श्री मोहनलाल सिसोदिया (खारची) ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) की सहवर्तिनी साध्वी पुण्यप्रभाजी एवं साध्वी निर्मलयशाजी ने आज पूज्यवर के दर्शन किए।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति राग-द्वेष से आविष्ट हो जाता है, कषाय के परवश हो जाता है। होना तो यह चाहिए कि कषाय हमारे अधीन हों। इसके विपरीत ऐसा लगता है कि व्यक्ति कषाय के अधीन हो गया। हमारी साधना ऐसी हो कि हम मन के गुलाम न बनें, बल्कि मन को अपने वश में रखें। राग-द्वेष विजित होने पर जंगल में जाने की जरूरत नहीं है। एकान्त साधना करें, जंगल में साधना करें, अच्छी बात है। लेकिन मूल बात यह है कि राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अभय का भाव विकसित होने पर व्यक्ति बड़ा कार्य संपादित कर सकता है। दुःख आने पर आदमी भयभीत होता है। भय व दुःख से मुक्ति पाने के लिए राग-द्वेष पर विजय पाना आवश्यक है। अध्यात्म एक ऐसा पथ है, जिस पर चलकर व्यक्ति राग-द्वेष से मुक्ति की साधना कर सकता है। जो व्यक्ति अपनी भूलों का परिमार्जन व परिष्कार करता है, वह अपने विकास का पथ प्रशस्त कर लेता है। ध्यान, स्वाध्याय और अनुप्रेक्षा के द्वारा राग-द्वेष को न्यून करने का प्रयास करें।'

मारवाड़जंक्शन आगमन के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'यहां के अनेक श्रावक दूर-दूर से आए हैं। साध्वी लक्ष्यप्रभा को हमने यहां भेजा। उन्हें स्वस्थ रहते हुए काम करना है। शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) व साध्वी चन्द्रकलाजी अभी पाली में प्रवासित हैं। साध्वी भीखांजी की सहवर्तिनी दो साध्वियां यहां दर्शन हेतु आई हैं।' पूज्यप्रवर ने मारवाड़जंक्शन के पार्श्ववर्ती क्षेत्र दुधोड़ के स्व. आगम मनीषी मुनि दुलहराजजी (बहुश्रुत परिषद के प्रथम बैच के सदस्य) का भी उल्लेख किया। आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का अभिभाषण हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। उल्लेखनीय है--इसी ग्राउण्ड में बाईस वर्ष पूर्व आचार्य तुलसी ने अपना मंगल प्रवचन दिया था।

vkri e lrkigkjh ;k=k

आज प्रातः मारवाड़जंक्शन में प्रवेश से पूर्व मार्गवर्ती खारची गांव में कुछ श्रद्धालुओं के घरों की स्पर्शना पूर्व निर्धारित थी। खारची गांववासी गांव में प्रवेश जिस मार्ग से करवाना चाहते थे, वह थोड़ा दूर था। उस समय किसी ने दूसरा मार्ग सुझाया, जो सीधा था। आचार्यवर उसी मार्ग पर आगे बढ़े। संयोग से उस मार्ग पर सचित्त मिट्टी इस तरह बिछी हुई थी कि उस मार्ग पर चलना असंभव हो गया। समयाभाव के कारण दूसरे मार्ग से खारची गांव न पधार कर आचार्यप्रवर सीधे मार्ग से मारवाड़जंक्शन पधार गए। खारचीवासियों का मायूस होना स्वाभाविक था। मध्याह्न में खारची के सरपंच व अन्य लोगों ने पूज्यवर के दर्शन कर पुनः खारची पधारने का भावपूर्ण अनुरोध किया। किन्तु उस समय आचार्यवर ने उन्हें स्वीकृति प्रदान नहीं की। उनके जाने के बाद भक्तवत्सल करुणानिधान आचार्यवर मन ही मन उनके प्रति करुणार्द्र हो गए और खारची जाने की भावना के साथ दूरी आदि की जानकारी प्राप्त की। जब कुछ श्रद्धालु पुनः निवेदन हेतु उपस्थित हुए तो आचार्यवर ने अनुग्रहवृष्टि करते हुए सायं खारची जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। आचार्यवर की इस करुणावृष्टि से खारचीवासियों के मुरझाए मन खिल उठे। उनकी प्रसन्नता का कोई पार नहीं था।

आज आतप भी विशेष था। सायंकालीन आहार के पश्चात् चिलचिलाती धूप में आचार्यवर खारची पधारे और वैकल्पिक मार्ग से घरों का स्पर्श किया। कुछ घरों के सामने सचित्त मिट्टी बिछी हुई थी, उनमें जाने के लिए आचार्यवर ने घरों के आगे बने बरामदों का सहारा लिया। आचार्यवर बिना सीढ़ी के उन बरामदों पर चढ़े और श्रद्धालुओं की भावना को तृप्ति प्रदान की। किन्तु गांव के मुखिया व्यक्ति श्री मोहनलाल सिसोदिया के घर जाने हेतु वैकल्पिक मार्ग भी नहीं मिला। इसलिए आचार्यवर ने सामने वाले घर के बरामदे में खड़े होकर मंगलपाठ सुनाया। इतना ही नहीं, उन पर कृपावृष्टि करते हुए 'स्वामी भीखणजी रो नाम आठूंयाम ध्यावां' गीत का संगान भी किया। इस प्रकार आचार्यवर की अनुग्रहवृष्टि में अभिस्नात् सुदूर दक्षिण से समागत श्रद्धालुओं की आंखें आर्द्र हो गईं। उन्हें अपनी भूल और अज्ञान का अहसास हुआ। खारची के ग्रामीणों ने विभिन्न टोलियों में पूज्यवर की भावभीनी अगवानी की। गांव के चौक में पूज्य आचार्यवर का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। कई लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यवर पुनः मारवाड़जंक्शन प्रवास स्थल पर सूर्यास्त के करीब पहुंचे। सायंकाल के इस लगभग छह किमी. के विहार को मिलाकर आज आचार्यवर ने लगभग बाईस किमी. की यात्रा की। जय-जय महाश्रमण।

रात्रि में आचार्यवर ने सबको पारिवारिक सेवा करवाई और उन्हें धार्मिक प्रेरणा दी। आचार्यवर का प्रेरक उद्बोधन भी हुआ। मारवाड़जंक्शन में लगभग साठ घर तेरापंथी हैं, जबकि तीस अन्य जैन परिवार हैं। सबने आचार्यवर के प्रवास का पूरा लाभ उठाया।

xknk.kk e èke dl egkjk.kk dl pj.kk e R;kx dk utjk.kk

f‹ ekpA प्रातः मारवाड़जंक्शन से विहार करते हुए आचार्यवर स्थानीय तेरापंथ भवन पधारे। वहां 'प्रभो! यह तेरापंथ महान' गीत का संगान किया। वहां से मार्गवर्ती गांव चिरपटिया पधारे। पन्द्रह चौकों में विभक्त श्रद्धालु परिवारों सहित गांववासियों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के गीत के बाद श्री महावीर भंसाली और श्री अमृत भंसाली ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। श्री मांगीलाल घांची ने भावाभिव्यक्ति के उपरान्त पूज्यप्रवर से गुरुधारणा स्वीकार की। दो स्थानकवासी परिवार भी इस अवसर पर गांव आए। ग्रामीणों की विशाल सभा को संबोधित करते हुए पूज्यप्रवर ने धर्म को जीवन में आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। श्री पारसमलजी भंसाली ने इस अवसर पर सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया। यहां के लोग मुख्यतः चेन्नई, बेंगलुरु व हासन में प्रवास करते हैं। सबने आचार्यवर के दर्शन कर कृतार्थता की अनुभूति की।

मारवाड़जंक्शन से चिरपटिया होते हुए तेरह किमी. का विहार कर आचार्यवर गादाणा पधारे। पूज्यप्रवर का आज का प्रवास राजकीय प्राथमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय परिसर के बाहरी चौक में आयोजित प्रातःकालीन स्वागत कार्यक्रम में महिला मंडल द्वारा गीत प्रस्तुति के बाद श्री माणक मूथा एवं सुश्री रक्षा गादिया ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। विधायक श्री केसाराम चौधरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति के बाद आचार्य महाश्रमण को अपने धर्मगुरु के रूप में स्वीकार करने का संकल्प व्यक्त किया। साध्वी काव्यलताजी ने अपनी पैतृक भूमि की ओर से आचार्यवर का अभिनंदन किया। मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने अपने ननिहाल क्षेत्र की ओर से स्वागत किया।

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के प्रेरक वक्तव्य के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज आप सभी यहां अमृतपान करने आए हैं, क्योंकि अमृत पुरुष का आपके गांव में शुभागमन हुआ है। अमृत संतों की वाणी में रहता है। पूज्यवर की अमृत देशना से आप धर्म के मर्म को समझने का प्रयास करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'एकाग्रता विशुद्ध और मलिन दोनों होती है। मलिन एकाग्रता आर्त्तध्यान और रौद्र ध्यान के रूप में प्रकट होती है। विशुद्ध एकाग्रता धर्म व शुक्ल ध्यान के रूप में प्रस्फुटित होती है। व्यक्ति सदैव स्वयं को कार्य में संलग्न रखे, वह खाली न रहे। खाली समय में उसे जप प्रारंभ कर देना चाहिए। अजपाजप चले, भीतर से जपमय हो जाएं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'समर्पण ऐसा तत्त्व है, जो व्यक्ति को सफलता की ओर अग्रसर करता है। हमारा समर्पण अपने लक्ष्य, कर्तव्य, गुरु व आत्मा के प्रति होना चाहिए। समर्पण भाव से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। समर्पण को साधना से संपृक्त बनाएं तो वीतरागता की दिशा उद्‌घाटित हो सकती है। साधु-साध्वियों में समर्पण है, तभी वे सब जगह जाकर काम करते हैं, जनोपकार करते हैं। आचार्य भिक्षु का साधना के प्रति कितना समर्पण भाव था। ऐसे साधक की साधनागत ऊंचाई अमाप्य होती है। मारवाड़ की इस धरा पर उन्होंने बहुत विचरण किया। हम भी अपने संकल्प बल को मजबूत बनाएं।' आचार्यप्रवर ने गुरुदेव तुलसी का स्मरण करते हुए उनकी साधना एवं उनके कर्तृत्व को विभिन्न कोणों से व्याख्यायित किया।

गादाणा आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'गादाणा के स्वर्गीय मुनि अगरचन्दजी स्वामी एक अच्छे मुनि थे। मैं सम्मान के साथ ऐसे वयोवृद्ध मुनि को याद करता हूं। यहां की एक साध्वी पन्नाजी हुई हैं। मुनि जंबूकुमारजी ने अपनी ननिहाल की ओर से हमारा स्वागत किया। ये अच्छा काम करने वाले विनीत संत हैं। अब तो व्याख्यान देने लग गए हैं। खूब अच्छा काम करना है। यहां की साध्वी मृदुलाकुमारीजी को पैर की कठिनाई के कारण मेवाड़ से लाडनूं भेजा। वे दक्षिण यात्रा करके आईं। साध्वी काव्यलताजी भी यहीं की हैं। काम करने वाली साध्वी हैं। साधना व समर्पण के साथ सेवा, लेखन व अपने कर्तृत्व का विकास करें। यहां के अनेक-अनेक श्रावक हैं। किस-किस का नाम लूं। हमारा श्रावक-श्राविका समाज समर्पित, विनीत व श्रद्धा-भक्ति वाला है। इसमें अच्छी भक्ति-भावना है, गुरुदृष्टि का आराधक है।' कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में गांववालों की अच्छी उपस्थिति के साथ राणावास तेरापंथ मानव हितकारी शिक्षण संस्थान की छात्राएं भी बड़ी संख्या में उपस्थित थीं।

सायं आचार्यवर ने गांव के घरों का स्पर्श किया। रात्रि में पारिवारिक सेवा, प्रेरणा व प्रवचन का क्रम चला। तेरापंथ के इस इकरंगे क्षेत्र गादाणा में कुल सैंतालीस तेरापंथी परिवारों में चालीस घर खुले। प्रायः दक्षिण प्रवासी श्रावकों में अच्छा उत्साह था। आचार्यवर की पावन प्रेरणा से लोगों ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान किए।

भविष्य का संकेत

१० मार्च को जोजावर प्रवास के दौरान सायंकाल पूज्य आचार्यप्रवर स्थानीय रावले में पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान हुए। प्रसंगवश आचार्यवर ने ठाकुर महाराजसिंहजी से पूछा--'वि.सं.१९९० में गुरुदेव तुलसी जब इस रावले में पधारे थे, तब यहां के ठाकुर कौन थे?'

महाराजसिंहजी ने उत्तर में कहा--'मेरे पिताजी ठाकुर केसरीसिंहजी थे।'

आचार्यवर ने कहा--'उस समय का एक प्रसंग मेरी स्मृति में आ रहा है। जब गुरुदेव तुलसी यहां पधारे, तब ठाकुर केसरीसिंहजी ने उनसे निवेदन किया--'आप कालूगणी के साथ यहां पधारे थे, तब आप (गुरुदेव तुलसी) छोटे साधु के रूप में थे। मैंने कालूगणी से आपके लिए कहा था कि ये अच्छे साधु के रूप में उभरेंगे और आज आप आचार्य के रूप में यहां पधारे हैं।'

केसरीसिंहजी की बात को सुनकर गुरुदेव तुलसी के साथ पधारे युवाचार्य महाप्रज्ञजी ने मेरी (आचार्य महाश्रमण, तत्कालीन महाश्रमण मुनि मुदितकुमार) ओर संकेत करते हुए कहा--'ठाकुर साहब! अब इन्हें देखिए।'

ठाकुर महाराजसिंहजी ने आचार्यवर द्वारा सुनाए गए इस घटना-प्रसंग पर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा--'हां, मेरे पिताजी ने कालूगणी वाला प्रसंग उस समय सुनाया था।' वर्षों पूर्व युवाचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अपने भावी उत्तराधिकारी की ओर किए गए संकेत की बात को पूज्यवर के मुखारविन्द से सुनकर सभी श्रोता विस्मयविमुग्ध थे।

भगवान पधारिया है भगवान

१२ मार्च को पूज्यप्रवर खिंवाड़ा में प्रवेश कर रहे थे। स्वागत जुलूस के मध्य खेताराम चौधरी नामक एक प्रौढ़ व्यक्ति पूज्यप्रवर के सम्मुख उपस्थित हुआ और श्रीचरणों में अपनी पगड़ी रखते हुए नतसिर सादर वंदन किया। अपने साथ लाई तगारी में भरे बेर और दूसरे बर्तन में कटे हुए पपीते को लेने का आग्रह करते हुए बोला--'ओ तो लेणो पड़ी।'

उसे साधुचर्या की जानकारी दी गई तो वह अपनी पगड़ी की ओर संकेत कर बोला--'ओ नहीं लो तो कोई बात नहीं, पण आ (पगड़ी) तो स्वीकार है नी?' (अर्थात् मेरा वंदन तो स्वीकार है न?) पूज्यप्रवर की ओर से स्वीकृतिसूचक संकेत पाकर वह खुशी से झूम उठा।

पूज्यप्रवर जुलूस के साथ कुछ आगे बढ़े ही थे कि मच्छरामजी आश्रम में रहनेवाली एक वृद्धा जमनाबाई अपने हाथ में एक सौ इक्यावन रुपये और मिश्री लेकर आई और पूज्यवर से उन्हें स्वीकार करने की प्रार्थना की। उसे भी साधुचर्या की अवगति दी गई तो वह वंदन करते हुए पुनः आश्रम की ओर मुड़ गई। करुणानिधान आचार्यवर उस वृद्धा पर अयाचित करुणावृष्टि करते हुए आश्रम की ओर पधार गए। जब जमनाबाई ने पूज्यवर को आश्रम की ओर पधारते देखा तो वह अपने दुर्बल हाथों से मार्ग की मिट्टी साफ करने लगी। किन्तु द्वार पर बिछी सचित्त मिट्टी के कारण आचार्यवर आश्रम के भीतर नहीं पधार सके और उस वृद्धा को वहीं से आशीर्वाद प्रदान किया। वह उल्लसित स्वर में बोली--'आज तो भगवान पधारिया है भगवान।'

आचार्यवर धनला से दो किमी. की दूरी पर स्थित सच्चियाय माता मंदिर में अवलोकनार्थ पधारे। मार्गवर्ती गजनीपुर गांव के लोगों को पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। अनेक लोगों ने आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्त बनने का संकल्प व्यक्त किया।

Lefr&lcy

- उज्जैन निवासी श्री प्रकाशचन्द पीपाड़ा का मुम्बई में देहान्त हो गया। वे परिवार में पूज्य डालगणी के संसारपक्षीय प्रपौत्र थे। समण सिद्धप्रज्ञजी के मामा थे। साठ वर्षीय पीपाड़ाजी धार्मिक, सरल व सेवाभावी श्रावक थे। शोकमय वातावरण के मध्य समणजी के पहुंचने से परिवार को धार्मिक प्रेरणा प्राप्त हुई।
- सरदारशहर निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्री नथमल नाहटा का निधन हो गया। मूलतः राजगढ़ के इस नाहटा परिवार से साध्वी मालूजी, साध्वी मोहनाजी, साध्वी रतनकुमारीजी, साध्वी सिरेकुमारीजी, साध्वी गोरांजी, साध्वी हरकंवरजी, साध्वी लिछमाजी ने दीक्षित होकर संघ की सेवा की है। गुवाहाटी तेरापंथ भवन के निर्माण में इनका भी योगदान रहा। वे स्वयं इतने शिक्षित नहीं थे, पर इनके पांच पुत्रों के सत्ताईस सदस्यों में तेरह पोस्ट ग्रेज्युएट व दस ग्रेज्युएट हैं। अपनी सास दाखांदेवी पींचा के पचहत्तरदिवसीय संथारे के बाद नाहटाजी का धार्मिक रुझान बढ़ता गया। त्याग-प्रत्याख्यान के बीच सागारी अनशन में उनका स्वर्गवास हो गया।
- छोटीखाटू निवासी चेन्नई प्रवासी श्री अमोलकचन्दजी भंडारी का स्वर्गवास हो गया। वे चेन्नई के वरिष्ठ श्रावक थे। भंडारी परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है।
- सुजानगढ़ निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती किरणदेवी राखेचा (धर्मपत्नी-श्री झणकारमलजी राखेचा का देहावसान हो गया। रात्रि भोजन का यावज्जीवन परिहार रखने वाली श्रीमती किरणदेवी के प्रतिदिन दो सामायिक, जप आदि का क्रम था। चतुर्मास में वे गुरु उपासना का लाभ लेती रहीं। उनके ससुर उदयचन्दजी के पात्रदान की बलवती भावना रहती थी। परिवार में यह संस्कार आज भी जीवंत है।
- सायरा निवासी सूरत प्रवासी श्री हुकमीचन्दजी कावड़िया का देहान्त हो गया। उनके सामायिक, जप आदि धार्मिक उपासना का नित्यक्रम था।
- गंगाशहर निवासी सिलचर-गुवाहाटी प्रवासी श्री मूलचन्दजी भंसाली का देहावसान हो गया। उनका जीवन धार्मिकता से ओतप्रोत था। समायिक आदि नित्य उपासना का क्रम था। प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदर्शन किया करते थे। देहावसान के बाद उनका नेत्रदान किया गया। उनकी धर्मपत्नी गौरादेवी तपस्विनी व श्रद्धानिष्ठ श्राविका है।

vkpk; egkJe.k ver egkRlo ij lek;kT; dk;Øe

परम पावन आचार्यप्रवर का पचासवां वर्ष धर्मसंघ द्वारा आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष के रूप में अत्यन्त उल्लास और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देशभर में धर्मशासन की प्रभावना करने वाले विभिन्न धार्मिक और सामाजिक उपक्रम समायोजित हुए हैं। उसी क्रम में आगामी वैशाख शुक्ला नवमी, तदनुसार ३० अप्रेल २०१२ को अमृत महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम बालोतरा में भव्यता के साथ मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों श्रद्धालु आराध्य की अभिवंदना हेतु बालोतरा पहुंचेंगे। अमृत महोत्सव पर समायोजित सप्तदिवसीय कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा--

„‡ viy	राष्ट्र निर्माण में अणुव्रत की भूमिका
„^ viy	अभिनव सामायिक
„‰ viy	**ikr% %&** 'संपन्न बनो' लोकार्पण समारोह।
	रात्रि :- भाषण प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता (फाइनल राउण्ड)
„Š viy	**ikr% %&** वर्धापना समारोह
	jkf=k %& कवि सम्मेलन

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

„‹ viy — ikr% %& वर्धापना समारोह
jkf=k %& 'सहयात्री' नाटिका मंचन
…, viy — मुख्य समारोह
f eb — तृतीय पदाभिषेक समारोह

इस अवसर पर संघबद्ध रूप में पहुंचने वाले महानुभाव अपने आगमन की अग्रिम सूचना मोबाइल नं. ६३१२२२२८५१, ९८१००३६८२८ प्रेषित कर दें तो व्यवस्थाओं में सुगमता रहेगी।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

११०००/- अणुव्रत अनुशास्ता परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के जाणुन्दा पदार्पण एवं नवनिर्मित 'आचार्य महाश्रमण सेतु' के लोकार्पण के उपलक्ष्य में देवराज मूलचन्द नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट एवं सेठ सिरेमलजी देवराजजी नाहर परिवार, जाणुन्दा-बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती कंचनदेवी मेहता (धर्मपत्नी-स्व.मांगीलालजी मेहता, मजेरा) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में अंबालाल फतेहलाल, रमेश, रोशन, प्रकाश, नवरतन, विनोद, सुमित, दीपक व कल्पना मेहता, उदयपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सायरबाई (धर्मपत्नी-श्री चुन्नीलालजी राठौड़, नाथद्वारा-कोशीवाड़ा) की ३२वीं पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र मोहनलाल, सुखलाल, हितेश, सुपौत्र विकास, संदीप, दीपक, जितेश, राहुल, लवेश, प्रपौत्री एवं प्रपौत्र निर्वी, मितांश, हितार्थ, हार्दिक, अदिति, जिन्नी राठौड़, मलाड-खुपोली (महा.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री भंवरीलालजी छल्लाणी, आर्णी (महा.) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने तथा सुपौत्र श्रेयांश छल्लाणी के चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने के उपलक्ष्य में प्रकाशचन्द, अशोकचन्द, दिलीपचन्द, गौतमचन्द, रवीन्द्र, किशोर, प्रवीण, श्रेयांश, हिमांशु छल्लाणी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.जयन्तीभाई बी.मेहता (वाव-बड़ोदरा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू किरीट-सुशीला, राजेश-संपत, सुपौत्र जिनेश, श्रेयांश, प्रपौत्र धृशित मेहता द्वारा प्रदत्त।

lLdkj fuek.k f'kfoj dk lnHk e

बालपीढ़ी में संस्कार निर्माण की दृष्टि से 'संस्कार निर्माण शिविर' एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। ग्रीष्मावकाश इसके आयोजन के लिए उपयुक्त समय है। परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आगामी ११-१८ मई को राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इससे पूर्व अथवा पश्चात स्थानीय स्तर पर भी ऐसे शिविरों का समायोजन हो, यह अपेक्षित है। साधु-साध्वियों, समणश्रेणी और श्रावक समाज की जागरूकता बालपीढ़ी को इस महत्त्वपूर्ण उपक्रम से जोड़ने वाली सिद्ध हो सकेगी।

आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय अहर्निश परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की सेवा में है। किन्तु पत्र-व्यवहार की दृष्टि से अब हमारा पता है--

d'koilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk]
ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641
fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % 24&3&2012

•

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mikè;k; ekx] ub fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr rFkk iou fiVl] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnrA lEiknd % **d'koilkn pronhA**